शिवाजी विश्वविद्यालय
हिंदी विभाग
कोल्हापुर.

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि **श्री. किरण अमृतराव देशमुख** का **''दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में चित्रित यथार्थ''** लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

8/7/05

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

स्थान : कोल्हापुर।
दिनांक : ९।७।०५

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्.ए.,बी.एड्.,पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004

दि. :

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री.किरण अमृतराव देशमुख** ने **शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर** की **एम्.फिल.(हिंदी)** उपाधि के लिए **''दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में चित्रित यथार्थ''** लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। पूर्वयोजना के अनुसार संपन्न इस शोध कार्य में शोधार्थी ने मेरे सुझावों का आद्यंत पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किये गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ।

शोध-निर्देशक
8/9/05
(डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण)

स्थान : कोल्हापुर।
दिनांक : ८।९।०५

प्र ख्या प न

"दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में चित्रित यथार्थ" लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो **एम्.फिल. (हिंदी)** उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्र

(श्री. किरण अमृतराव देशमुख)

स्थान : कोल्हापुर।
तिथि : 8/9/05

प्राक्कथन

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

प्राक्कथन

हिंदी साहित्य की समस्त विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा के प्रति मेरी शुरू से ही अधिक रूचि रही है। स्नातक स्तर पर अध्ययनार्थ लगाया गया उपेंद्रनाथ अश्क जी का 'पत्थर-अल-पत्थर' का अध्ययन किया। स्नातकोत्तर अध्ययन के दौरान अपने युग के शीर्षस्थ उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के 'गोदान', 'गबन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' इसके अलावा उपेंद्रनाथ अश्क के 'शहर में घुमता आईना', 'बड़ी बड़ी आँखे', भीष्म साहनी का 'तमस', मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी', उषा प्रियंवदा का 'पचपन खंबे लाल दिवारें', मैत्रेयी पुष्पा का 'विज़न', राही मासूम रजा का 'टोपी शुक्ला' आदि को पढ़ा। एम.फिल. के अध्ययन के दौरान शानी जी का 'काला जल', राजेंद्र यादव जी का 'शह और मात', विनोद कुमार शुक्ल का 'नौकर की कमीज', अलका सरावगी का 'कली कथा : वाया बायपास' तथा अज्ञेय जी का 'अपने-अपने अजनबी' जैसे वैविध्यपूर्ण विषयवस्तु के उपन्यास पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। प्रत्येक उपन्यास में नायक तथा नायिका का अपने अस्तित्व के प्रति संघर्ष, नारी अत्याचार, बदलती शिक्षा व्यवस्था, धर्मांधता, जातीयता, रिश्वतखोरी, अखबारी नीति, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता की भड़कती आग तथा वर्तमान में फैली हुई अनन्य समस्याओं को पढ़ने तथा अध्ययन करने के उपरांत मेरा मन अत्याधिक बेचैन हो उठा कि मानव मानवता को भूलकर कितना निर्दयी तथा आत्मकेंद्रित बनता जा रहा है और अपने मूल्यों का बड़ी निर्घृणतासे ह्रास कर रहा है तथा उसके दिलो-दिमाग में हैवानियत निवास कर रही है। मौका पाकर वह कभी भी कहीं भी अपना फ़न बाहर निकालती है और पूरी दुनिया को हिलाकर रख देती है कि अभी पूरी दुनिया को ही पलट देगी। इस गंभीर सोच के उपरांत परिणाम स्वरुप मेरा मन-मस्तिष्क आगे चलकर यथार्थवादी साहित्य की तलाश करता रहा।

एम्.फिल. के लिए जब शोध विषय चयनारंभ हुआ तब मैंने अपने लिए उपलब्धि सिद्ध हुए तथा मेरे सौभाग्य से प्राप्त हुए वंदनीय गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से शोध-विषय के बारे में विचार-विनर्श किया। आपने मेरी रूचि को ज्ञान की तीसरी आँख से आसानी से पहचान लिया। साथ ही अनेक अनछुये तथा मौलिक रचनाकारों के नामों की कतार-सी मेरे सामने खड़ी की। ऐसे रचनाकारों में उपन्यासकार दूधनाथ सिंह जी का नाम भी अग्रगण्य पंक्ति में था। उनका नाम सुनते ही मुझे उनका हाल ही में प्रकाशित हुआ 'आख़िरी कलाम' उपन्यास याद आया, क्योंकि 'हंस' पत्रिका में इस उपन्यास पर काफी बहस हुई थी। अत: इसी उपन्यास पर ही मुझे अनुसंधान करना है इस विचार से मेरा मन प्रफुल्लित हो उठा।

आदरणीय गुरूवर्य जी ने दूधनाथ सिंह का उपन्यास साहित्य तथा अन्य पत्र-पत्रिकाएँ एवं समीक्षात्मक ग्रंथ पढ़ने का सुझाव दिया।

दूधनाथ सिंह के 'निष्कासन' तथा 'आख़िरी कलाम' को पढ़कर मैं काफी प्रभावित हुआ। उन्होंने अपनी रचनाओं में समाज में फैली हुई अनेक वैविध्यपूर्ण समस्याओं को यथार्थ के धरातल पर पाठकों के सम्मुख रखने का महत् प्रयास किया है जो अन्यत्र दुर्लभ है। इसके उपरांत मैं अपने गुरूवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी से मिला। आपके पुछे गए प्रश्नों के उत्तर समाधानकारक मिलने के पश्चात आपने संतृप्ति प्रकट की और गहरे विचार-विमर्श के पश्चात शोध-प्रबंध के लिए "दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में चित्रित यथार्थ" नामक शीर्षक का चयन हुआ।

अनुसंधान के आरंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न प्रकट हुए थे -

1. दूधनाथ सिंह का व्यक्तित्व तथा कृतित्व किन-किन मोड़ों से गुजरा है?
2. दूधनाथ सिंह का औपन्यासिक लेखन कौन-से विषयों को लेकर हुआ है?
3. दूधनाथ सिंह के उपन्यासों के मूल तत्त्व एवं संवेदना क्या हैं?
4. दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में शिक्षा जगत का यथार्थ चित्रण किस प्रकार एवं कितनी मात्रा में हुआ है?
5. दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में सांप्रदायिकता की भयानकता का गहराई से अंकन हुआ है?
6. दूधनाथ सिंह के उपन्यासों में वर्तमान काल में फैली किन-किन समस्याओं का चित्रण हुआ है?
7. दूधनाथ सिंह के उपन्यासों का मूल उद्देश्य क्या है?

विवेच्य उपन्यासों के अध्ययन के अनंतर उक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए, उन्हें उपसंहार में दिया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु-शोधप्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक है - "दूधनाथ सिंह : व्यक्तितत्व एवं कृतित्व" प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने दूधनाथ सिंह जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है। इसमें उनकी जन्म-तिथि, जन्म-स्थान, माता-पिता, परिवार, बचपन, शिक्षा, नौकरी, विवाह,

संप्रति, रहन-सहन, संतान, मित्र-परिवार आदि बातों का विवेचन किया है। साथ-साथ उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की विशेषताओं को स्पष्ट करके उनके कृतित्व अर्थात साहित्य संसार के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

दूवितीय अध्याय का शीर्षक है - ''दूधनाथ सिंह के उपन्यास : परिचयात्मक विवेचन''। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दों के आधार पर दूधनाथ सिंह के उपन्यासों का संक्षेप में परिचयात्मक विवेचन किया है। इसमें विषयवस्तु, पात्रयोजना, भाषा-शैली, तथा प्रतिपाद्य आदि बातों का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है - ''दूधनाथ सिंह के उपन्यास और शिक्षा जगत का यथार्थ''। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने 'शिक्षा' शब्द का अर्थ, परिभाषा तथा शिक्षा जगत के यथार्थ से तात्पर्य आदि बातों का विवेचन किया है। तदूउपरांत विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त शिक्षा जगत के यथार्थ का विवेचन-विश्लेषण किया है। इसके अंतर्गत छात्र जीवन से संबंधित अभिव्यक्त यथार्थ, छात्रावास से संबंधित अभिव्यक्त यथार्थ, अध्यापकों से संबंधित अभिव्यक्त यथार्थ, प्रशासन से संबंधित अभिव्यक्त यथार्थ तथा शिक्षा व्यवस्था से संबंधित अन्य यथार्थ आदि बातों का विवेचन-विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है - ''दूधनाथ सिंह के उपन्यास और सांप्रदायिक यथार्थ ''। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत सांप्रदायिक शब्द का अर्थ, परिभाषा, सांप्रदायिक यथार्थ से तात्पर्य आदि बातों का विवेचन करके विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त सांप्रदायिक यथार्थ को चित्रित किया है। इसके अंतर्गत धर्मांधता एवं जातीयता, हिंदू-मुस्लिमों के बीच अनबन, दंगे-फसाद, धार्मिक स्थलों एवं घरों का ध्वंस, शिक्षा-व्यवस्था, अखबार, राजनीति, विवादास्पद धार्मिक किताबें/ग्रंथ, पुलिस, मिथकीयता, धर्म के नाम पर अधर्म, वर्णवादी व्यवस्था तथा सांप्रदायिकता के परिणामस्वरूप साँझा संस्कृति का ह्रास आदि बातों का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

पंचम अध्याय का शीर्षक है - ''दूधनाथ सिंह के उपन्यास और वर्तमान कालीन विविध यथार्थ समस्याएँ''। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत वर्तमानकालीन विविध यथार्थ समस्याओं

से तात्पर्य तथा विवेच्य उपन्यासों में प्राप्य वर्तमानकालीन समस्याओं का अंकन किया है। इसमें जातिवाद की समस्या, आर्थिक समस्या, धर्मांधता के कारण उपजी समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, सांप्रदायिकता की समस्या, प्रेम तथा अंतर्जातीय विवाह की समस्या, आत्महत्या की समस्या, संतानों को लेकर माता-पिता की समस्या, अखबार की समस्या, आज के मठों की समस्या, नारी समस्या, शिक्षा व्यवस्था की समस्या, कार्यालयों की समस्या, दलित उत्पीड़न की समस्या, मुस्लिमों की समस्या, अवैध संतान की समस्या, गुंडागर्दी तथा छेड़छाड़ की समस्या आदि समस्याओं का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

अतः अंत में 'उपसंहार' के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्ण विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्षों को दिया गया है। इसके उपरांत परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

इस लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता :

1. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध दूधनाथसिंह द्वारा लिखित उपन्यासों में चित्रित यथार्थ पर केंद्रित है। हिंदी साहित्य में दूधनाथ सिंह द्वारा चित्रित यथार्थ का इस लघु शोध-प्रबंध में स्वतंत्र रूप से अध्ययन पहली बार संपन्न हुआ है।
2. दूधनाथ सिंह के औपन्यासिक साहित्य में चित्रित शिक्षा जगत के यथार्थ का तथा सांप्रदायिक यथार्थ का स्वतंत्र अध्याय के रूप में अनुसंधान किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध-प्रबंध में विवेच्य उपन्यासों में चित्रित वर्तमान में पनपी विभिन्न समस्याओं का भी स्वतंत्र रूप से विवेचन-विश्लेषण किया गया है।

❑❑❑❑

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की आपूर्ति जिन महानुभावों तथा आत्मीयजनों की प्रेरणा एवं सहायता से हुई है, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं केवल औपचारिकता न समझकर अपना आद्य एवं परम् कर्तव्य मानता हूँ।

यह लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय एवं पूजनीय गुरूवर्य **डॉ. अर्जुन चव्हाण जी**, अध्यक्ष-हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के आत्मीय सहयोग, निरंतर प्रेरणा आदि के साथ अपने कुशल एवं अमूल्य निर्देशन के फलस्वरूप ही प्रस्तुत हो सका है। आपने अत्याधिक व्यस्तताओं के बावजूद भी मेरे लिए पर्याप्त समय दिया तथा मेरी जिज्ञासाओं को भी आत्मीयता से परितुष्ट किया जिसका मधुर फल यह लघु शोध-प्रबंध है। साथ ही आपने अपने मौलिक विचारों से एवं लिखित साहित्य से मुझे जीवन जीने की नई कला भी सिखाई है। आपका आदर्श, प्रसन्न एवं प्रभावी व्यक्तिमत्व मुझे सदैव प्रेरित करता रहा है। आप जैसे गुरूवर्य जी को शब्दों के फूलों में बाँधना मेरे लिए कठिन ही नहीं बल्कि असंभव बात हो जाती है। फिर भी मैं आप तथा आपके परिवार के प्रति आभार की केवल औपचारिकता न निभाते हुए सहृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। इतना ही नहीं तो मैं भगवान से यह दरख़ास्त करता हूँ कि भविष्य में भी आपके शुभ आशीष तथा कुशल पथ प्रदर्शन का आजीवन हकदार बनने की क्षमता प्राप्त हो।

जिस विषय पर मैंने अनुसंधान कार्य किया है उन औपन्यासिक कृतियों के रचईता **दूधनाथ सिंह जी** का भी सहयोग महत्त्वपूर्ण रहा है। साथ ही उनके निकटवर्ति स्नेही तथा व्याही **काशीनाथ सिंह जी** का भी सहयोग प्राप्त हुआ है। आपके सहयोग के अभाव में प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का साकार रूप संभव न होता। आपका यह सहयोग स्मरणीय कहना होगा। अत: मैं आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

आदरणीय एवं श्रद्धेय, परमात्मा स्वरूप **माता-पिता, चाचा-चाची, भाइयों, बड़ी भाभी** तथा **बहन-जीजा, दादी, मौसा-मौसी** आदि स्नेहजनों की प्रेरणा एवं असीम वात्सल्य तथा विश्वास का ही यह परिणाम है कि मैं अपना कार्य पूर्ण कर सका। अत: मैं हृदय से उनके प्रति आभार प्रदर्शित करता हूँ।

मेरे अभिभावक के रूप में होनेवाले तथा मेरी आर्थिक विवंचना के जानकार मेरे मामा **डॉ. सुनिल पवार** (भारती विश्वविद्यालय, पूना) तथा मामी **डॉ. सुषमा पवार** (विवेकानंद महाविद्यालय, कोल्हापुर) जी ने मुझे केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि भावात्मक आधार एवं मनोबल

भी दिया है, जिनके अपार कष्ट, प्रयास तथा स्नेह की पूर्ति यह लघु शोध-प्रबंध है। उनके इस आत्मीय एवं अतुलनीय सहयोग को भूलकर भी भूलना संभव नहीं है। अत: मैं उनके प्रति आजन्म कृतज्ञ हूँ और रहूँगा।

जिन गुरूजनों का अब तक के शैक्षिक जीवन में प्यार, स्नेह एवं प्रेरणा मिली इनमें मुख्यत: **प्रा. के.आर. कुंदप, डॉ. क्षीतिज धुमाळ, प्रा. बाबासाहेब साबळे** तथा विद्वज्जन **प्राचार्य डॉ. सुनीलकुमार लवटे, डॉ. यादवराव धुमाळ, डॉ. रतनकुमार पांडे, डॉ. नारायण शर्मा, डॉ. के.पी. शहा** तथा **डॉ. आशा मणियार, प्रा. उत्तरा कुलकर्णी, प्रा. एकनाथ पाटील, प्रा. एल.आर. पाटील, प्रा. शोभा निंबाळकर, डॉ. साताप्पा चव्हाण, प्रा. एस.एम. मणियार, डॉ. भारत साळुंखे, डॉ. प्रकाश मोकाशी** और **डॉ. वसंत सुर्वे** आदि सभी जनों के सहयोग से मैं काफी लाभान्वित हुआ। अत: इनके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

साथ ही साथ **छात्रावास के सभी प्रशासकीय अधिकारी** तथा **कर्मचारियों** के प्रति भी मैं धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध पूर्ति में मेरे आत्मीय मित्र **रमेश खबाले, भाऊसाहेब नवले, संदिप किर्दत, अशोक मरळे, गोरख किर्दत, डॉ. पंडित बन्ने, डॉ. भास्कर भवर, बाळासाहेब कामन्ना, डॉ. हनुमंत शेवाळे, नवनाथ पाटील, संजय गायकवाड, राहूल म्होपरे, विद्या सुतार, संतोष जेठीथोर, संतोष पवार, समाधान पवार, मच्छिंद्र फुले, प्रशांत भोरे, अर्जुन जाधव, विजय कदम, आप्पासाहेब पाटील, गजानन चव्हाण, मानसिंग दबडे, उद्धव गोडसे, विलास सुर्वे, चंद्रकांत बाविसकर, राजेंद्र बाबर** तथा **किरण चौगुले, द्राक्षायणी शिंदे, सुकेशनी पाटील, सुशांत पंडित** आदि के साथ **एम्.फिल. के सभी साथी और सहेलियों** का भी इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में परोक्ष-अपरोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है। अत: इन सभी आत्मीयजनों के प्रति मैं तहे दिल से कृतज्ञ हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक सामग्री संकलन मुझे **बैरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, यशवंतराव चव्हाण (के.एम.सी.) महाविद्यालय, कोल्हापुर, गोखले कॉलेज, कोल्हापुर, महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर** तथा **राजाराम महाविद्यालय, कोल्हापुर** से प्राप्त हुई। इन ग्रंथालयों के **ग्रंथपाल और सभी कर्मचारियों** के प्रति दिल से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। साथ ही हिंदी विभाग के बाबू **श्री. अनिल साळोखे** तथा **श्री. चांदणे मामा** का सहयोग भी महत्त्वपूर्ण रहा है। अत: मैं उनका भी आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का टंकण प्रभावी, आकर्षक, सुचारू एवं कलात्मक रूप से संपन्न करनेवाले **अक्षर टायपिंग** के संचालक **श्री.गिरीधर सावंत** तथा **श्रीमती पल्लवी सावंत** का भी मैं ऋणी हूँ। साथ ही साथ जिन ज्ञात-अज्ञात तथा परिचित-अपरिचितों की शुभकामनाएँ एवं आशीर्वचन मुझे प्राप्त हुए हैं उन सबके प्रति मैं आत्मीयतापूर्ण भाव से कृतज्ञता प्रकट करते हुए इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : शोध-छात्र

(श्री. किरण अमृतराव देशमुख)